Result Mitra Daily Magazine

11 नवंबर, राष्ट्रीय शिक्षा दिवस

➢ चर्चा में क्यों ?

- भारत की आजादी के बाद बने देश के पहले शिक्षा मंत्री अबुल कलाम आजाद की जयंती 11 नवंबर को प्रत्येक वर्ष "राष्ट्रीय शिक्षा दिवस" के रूप में मनाया जाता है।
- मौलाना अबुल कलाम आजाद वर्ष 1947 से 1958 तक भारत के शिक्षा मंत्री के रूप में कार्यरत रहे।
- वैधानिक रूप से 11 नवंबर को "राष्ट्रीय शिक्षा दिवस" मनाने की शुरुआत वर्ष 2008 में हुई।

➢ जीवनी :

- मौलाना अबुल कलाम आजाद या अबुल कलाम गुलाम मुहियुद्दीन का जन्म 11 नवंबर 1988 को मक्का में हुआ था।
- मौलाना अबुल कलाम आजाद अफगान उलेमाओं के खानदान से ताल्लुक रखते थे, जिनकी मां अरबी मूल की थी एवं पिता मोहम्मद खैरूद्दीन फारसी (ईरानी)थे।

- 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अबुल कलाम आजाद के पिता कलकत्ता छोड़कर मक्का चले गए एवं पुनः 1890 में भारत लौट आए।
- मौलाना अबुल कलाम की प्रारंभिक शिक्षा इस्लामी तरीके से हुई लेकिन बाद में उन्होंने इतिहास एवं गणित की शिक्षा ली।
- अबुल कलाम आजाद ने कभी भी विद्यालय/विश्वविद्यालय में दाखिला नहीं लिया, लेकिन उन्होंने उर्दू, फारसी, हिंदी, अरबी एवं अंग्रेजी भाषा पर पकड़ बनाई।
- 13 वर्ष की आयु में अबुल कलाम आजाद की शादी जुलैखा बेगम से हुई।
- अब्दुल कलाम आजाद सलाफी (देवबंदी) विचारधारा को मानने वाले एवं आधुनिक शिक्षावादी सर सैयद अहमद खां के विचारधारा से सहमत थे।
- आगे चलकर मौलाना अबुल कलाम आजाद ने एक स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षक, पत्रकार, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वरिष्ठ सदस्य एवं देश के पहले शिक्षा मंत्री के रूप में ख्याति प्राप्त की।

➢ पत्रकार के रूप में मौलाना आजाद :

- मौलाना अबुल कलाम आजाद अंग्रेजी हुकूमत के विरोधी होने के साथ-साथ उन मुस्लिम नेताओं के भी विरोधी थे, जो उस समय सांप्रदायिक विचारधारा को बढ़ावा दे रहे थे।
- मौलाना अबुल कलाम आजाद अंग्रेजी हुकूमत के विरोधी होने के साथ-साथ उन मुस्लिम नेताओं के भी विरोधी थे, जो उस समय सांप्रदायिक विचारधारा को बढ़ावा दे रहे थे।
- मौलाना अबुल कलाम आजाद ने 1905 में बंगाल विभाजन के विरोध के साथ-साथ ऑल इंडिया मुस्लिम लीग के अलगाववादी विचारधारा का भी विरोध किया।
- मौलाना अबुल कलाम आजाद ने मुस्लिम समुदायों के बीच क्रांतिकारी एवं देश प्रेम को बढ़ाने के उद्देश्य से वर्ष 1912 में एक साप्ताहिक उर्दू पत्रिका "अल–हिलाल" की स्थापना की।
- इस "अल–हिलाल" नामक साप्ताहिक उर्दू पत्रिका ने मार्ले–मिंटो सुधार के बाद हुए सांप्रदायिक तनाव के समय हिंदू–मुस्लिम सद्भाव बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।
- वर्ष 1914 में ब्रिटिश सरकार ने "अल–हिलाल" पर अलगाववादी भावनाओं का प्रचारक के रूप में काम करने के लिए प्रतिबंध लगा दिया।
- अल–हिलाल पर प्रतिबंध लगने के बाद मौलाना अबुल कलाम आजाद ने भारतीय राष्ट्रवाद और हिंदू–मुस्लिम एकता पर आधारित क्रांतिकारी साप्ताहिक पत्रिका "अल–बालाघ" का संपादन शुरू किया।
- वर्ष 1916 में ब्रिटिश हुकूमत ने "अल–बालाघ" पर भी प्रतिबंध लगा दिया एवं अबुल कलाम को कलकत्ता से निष्कासित कर बिहार निर्वासित कर दिया गया, जो पुनः 1920 में कलकत्ता लौटे।

➢ असहयोग आंदोलन में योगदान :

- 1920 में बिहार के रांची जेल से निकलने के बाद उन्होंने जलियांवाला बाग हत्याकांड का विरोध एवं खिलाफत आंदोलन का नेतृत्व किया।
- वर्ष 1920 में मौलाना अबुल कलाम आजाद को उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए फाउंडेशन कमेटी के सदस्य के रूप में चुना गया।
- वर्ष 1920 में ही मौलाना अबुल कलाम आजाद भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हो गए।
- वर्ष 1923 में दिल्ली में आयोजित कांग्रेस के विशेष सत्र के लिए कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया।
- 35 वर्ष की उम्र में कांग्रेस के अध्यक्ष बनने वाले वे सबसे कम उम्र के कांग्रेस अध्यक्ष थे।

➢ आजादी के बाद अबुल कलाम आजाद (शिक्षा मंत्री के रूप में) :

- भारत की आजादी के बाद मौलाना अबुल कलाम आजाद ने देश के पहले शिक्षा मंत्री के पद को सुशोभित किया।
- मौलाना अबुल कलाम को भारत में "भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT, Indian Institute of T) एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग" की स्थापना का श्रेय दिया जाता है।
- भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) की स्थापना मई 1950 एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्थापना नवंबर 1956 में हुई।
- भाषा और संस्कृति के विकास के लिए उन्होंने वर्ष 1953 में संगीत नाटक अकादमी, वर्ष 1954 में साहित्य अकादमी एवं वर्ष 1954 में ही ललित कला अकादमी की स्थापना की।
- इन सबके अलावा अबुल कलाम आजाद ने ग्रामीण गरीबों और लड़कियों को शिक्षित करने, वयस्क साक्षरता, सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा एवं व्यवसायिक प्रशिक्षण के विविधीकरण पर भी ध्यान केंद्रित किया।

➢ राजनीतिक सफर :

- वर्ष 1952 की संसदीय चुनाव में पहली बार मौलाना अबुल कलाम आजाद उत्तर प्रदेश के रामपुर लोकसभा से चुनाव लड़े एवं सांसद निर्वाचित हुए।
- वर्ष 1957 में वे पुन: हरियाणा के गुड़गांव संसदीय क्षेत्र से चुनाव लड़े एवं सांसद निर्वाचित हुए।
- 22 फरवरी 1958 को उनकी मृत्यु हो गई।

➢ पुरस्कार :

Result Mitra

- स्वतंत्रता सेनानी, विद्वान, पत्रकार एवं कवि के रूप में उनके प्रयासों के लिए मरणोपरांत वर्ष 1992 में उन्हें "भारत रत्न" (देश का सर्वोच्च पुरस्कार) से सम्मानित किया गया।

➢ अबुल कलाम आजाद की प्रमुख रचनाएं :

- इंडिया विन्स फ्रीडम
- गुबार–ए–खातिर
- आजाद ऑन पाकिस्तान
- तजकिरा

Result Mitra